

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः  
श्रीसीतालम्हणभरतशक्रहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

श्रीमद्रामायणे बाल्मीकीये आदिकार्ये सुन्दरकाण्डे

॥ रिंशः सर्गः ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

## ॥ रिंशः सर्गः ॥

रारणकर्तृकं सीतायाः प्रलोभनम्

स तां परिवृतां दीनां निरानन्दां तपस्विनीम्।  
साकारैर्मधुरैरैर्कैर्यददर्शयत रारणः ॥ 5.20.1 ॥

मां दृष्ट्वा नागनासोरु गूहमाना स्तनोदरम्।  
अदर्शनमिरात्मानं भयान्नेतुं ररमिच्छसि ॥ 5.20.2 ॥

कामये ररां रिशालाङ्गि बहू मन्यस्व मां प्रिये।  
सर्राङ्गुणसम्पन्ने सर्रलोकमनोहरे ॥ 5.20.3 ॥

नेह किञ्चिन्मनुष्या रा ररम्भसाः कामरूपिणः।  
र्यपसर्पतु ते सीते भयं मत्तः समुत्थितम् ॥ 5.20.4 ॥

स्वधर्मो ररम्भसां तीरु सर्रदैर न संशयः।  
गमनं रा परस्त्रीणां हरणं सम्प्रमथ्य रा ॥ 5.20.5 ॥

एरं चैरमकामां ररां न च स्प्रम्भ्यामि मैथिलि।  
कामं कामः शरीरे मे यथाकामं प्ररर्तताम् ॥ 5.20.6 ॥

देरि नेह भयं कार्यं मयि रिश्वसिहि प्रिये।  
प्रणयस्व च तत्त्वेन मैरं डूः शोकलालसा ॥ 5.20.7 ॥

एकरेणी अधःशय्या ध्यानं मलिनमम्बरम्।  
अस्थानेहप्युपरासश्च नैतान्योपयिकानि ते ॥ 5.20.8 ॥

রিচিত্রাণি চ মাল্যানি চন্দনান্যগুরুণি চ।  
রিরিধানি চ রাসাংসি দির্যান্যাভরণানি চ ॥ 5.20.9 ॥

মহার্হাণি চ পানানি শযনান্যাসনানি চ।  
গীতং নৃত্যং চ রাদ্যং চ লভ মাং প্রাপ্য মৈথিলি ॥ 5.20.10 ॥

স্ত্রীরত্নমসি মৈরং ভুঃ কুরু গাত্রেষু ভূষণম্।  
মাং প্রাপ্য হি কথং রা স্যাঙ্কমনর্হা সুরিগ্রহে ॥ 5.20.11 ॥

ইদং তে চারু সঞ্জাতং যৌরনং হ্যতিরর্ততে।  
যদতীতং পুনর্নৈতি শ্রোতঃ শ্রোতস্বিনামির ॥ 5.20.12 ॥

ৎরাং কৃৎরোপরতো মন্যে রূপকর্তা স রিশ্বকৃৎ।  
নহি রূপোপমা হন্যা তরাস্তি শুভদর্শনে ॥ 5.20.13 ॥

ৎরাং সমাসাদ্য রৈদেহি রূপযৌরনশালিনীম্।  
কঃ পুনর্নাতিরর্তেত সাক্ষাদপি পিতামহঃ ॥ 5.20.14 ॥

যদ্ যৎ পশ্যামি তে গাত্রং শীতাংশুসদৃশাননে।  
তস্মিংশুস্মিন্ পৃথুশ্রোণি চক্ষুর্মম নিবধ্যতে ॥ 5.20.15 ॥

ভর মৈথিলি ভার্যা মে মোহমেতং রিসর্জয।  
বহ্নীনামুত্তমস্ত্রীণাং মমাগ্রমহিষী ভর ॥ 5.20.16 ॥

লোকেভ্যো যানি রত্নানি সম্প্রমথ্যাহতানি মে।  
তানি তে ভীরু সর্বাণি রাজ্যং চৈর দদামি তে ॥ 5.20.17 ॥

রিজিত্য পৃথিবীং সর্বাং নানানগরমালিনীম্।  
জনকায প্রদাস্যামি তর হেতোর্বিলাসিনি ॥ 5.20.18 ॥

নেহ পশ্যামি লোকেহন্যং যো মে প্রতিবলো ভরেৎ।  
পশ্য মে সুমহদ্বীর্ঘমপ্রতিদ্বন্দ্বমাহরে ॥ 5.20.19 ॥

অসকৃৎ সংযুগে ভগ্না মযা রিমৃদিতধ্বজাঃ।  
অশক্তাঃ প্রত্যনীকেষু স্থাতুং মম সুরাসুরাঃ ॥ 5.20.20 ॥

ইচ্ছ মাং ক্রিয়তামদ্য প্রতিকর্ম তরোত্তমম্।  
সুপ্রভাণ্যরসজ্জন্তাং তরাঙ্গে ভূষণানি হি ॥ 5.20.21 ॥

সাধু পশ্যামি তে রূপং সুযুক্তং প্রতিকর্মণা।  
প্রতিকর্মাভিসংযুক্তা দাক্ষিণ্যেন ররাননে ॥ 5.20.22 ॥

ভুঙ্ক্ষুর ভোগান্ যথাকামং পিব ভীরু রমস্ব চ।  
যথেষ্টং চ প্রযচ্ছ ংরং পৃথিবীং রা ধনানি চ ॥ 5.20.23 ॥

ললস্ব মযি রিশ্রদ্ধা ধৃষ্টমাজ্ঞাপযস্ব চ।  
মৎপ্রসাদাল্ললন্ত্যাশ্চ ললতাং বান্ধবসুর ॥ 5.20.24 ॥

ঋদ্ধিং মমানুপশ্য ংরং শ্রিয়ং ভদ্রে যশস্বিনি।  
কিং করিষ্যসি রামেণ সুভগে চীররাসিনা ॥ 5.20.25 ॥

নিষ্কিণ্ডরিজযো রামো গতশ্রীর্ননগোচরঃ।  
ব্রতী স্থণ্ডিলশাযী চ শঙ্কে জীরতি রা ন রা ॥ 5.20.26 ॥

নহি রৈদেহি রামস্ত্বাং দ্রষ্টুং রাপ্যপলভ্যতে।  
পুরোবলাকৈরসিতৈর্মেঘৈর্জ্যাৎস্মামিরার্বতাম্ ॥ 5.20.27 ॥

ন চাপি মম হস্তাৎ ংরাং প্রাপ্তুমহতি রাঘরঃ।  
হিরণ্যকশিপুঃ কীর্তিমিন্দ্রহস্তগতামির ॥ 5.20.28 ॥

চারুস্মিতে চারুদতি চারুনেত্রে রিলাসিনি।  
মনো হরসি মে ভীরু সুপর্ণঃ পন্নগং যথা ॥ 5.20.29 ॥

ক্লিষ্টকৌশেযরসনাং তন্দ্রীমপ্যনলঙ্কৃতাম্।  
ংরাং দৃষ্টরা স্নেষু দারেষু রতিং নোপলভাম্যহম্ ॥ 5.20.30 ॥

অন্তঃপুরনিরাসিন্যঃ স্ত্রিয়ঃ সর্বাশুণান্ধিতাঃ।  
যারতো মম সর্সাসামৈশ্বর্যং কুরু জানকি ॥ 5.20.31 ॥

মম হ্যসিতকেশান্তে ত্রৈলোক্যপ্ররস্ত্রিয়ঃ।  
তাস্থাং পরিচরিস্যন্তি শ্রিয়মন্সরসো যথা ॥ 5.20.32 ॥

যানি রৈশরণে সুক্র রত্নানি চ ধনানি চ।  
তানি লোকাংশ্চ সুশ্রোণি মযা ভুঙ্ক্ষুর যথাসুখম্ ॥ 5.20.33 ॥

ন রামস্তপসা দেরি ন বলেন ন রিক্রমৈঃ।  
ন ধনেন মযা তুল্যস্তেজসা যশসাপি রা ॥ 5.20.34 ॥

পিব রিহর রমস্ব ভুঙ্ক্ষুর ভোগান্  
ধননিচযং প্রদিশামি মেদিনীং চ।  
মযি লল ললনে যথাসুখং ৳রং  
৳রযি চ সমেত্য ললন্ত বান্ধরাস্তে ॥ 5.20.35 ॥

কুসুমিততরুজালসন্ততানি  
ভ্রমরযুতানি সমুদ্রতীরজানি।  
কনকরিমলহারভূষিতাঙ্গী  
রিহর মযা সহ ভীরু কাননানি ॥ 5.20.36 ॥

॥ ইত্যর্ষে শ্রীমদ্রামায়ণে বাল্মীকীযে আদিকাণ্ডে সুন্দরকাণ্ডে রিংশঃ সর্গঃ ॥